भुवनेश्वरी जयन्ती

23 सितम्बर 2026

ज्ञानं देहि यशो देहि विद्यां देहि महेश्वरि।
धनं देहि श्रियं देहि सर्वकामांश्च देहि मे।।

हे त्रिभुवनेश्वरी! मुझे ज्ञान, विद्या, यश, धन, लक्ष्मी और धर्मसम्मत सभी शुभ इच्छाओं की सिद्धि प्रदान करें...



ज्ञान और अर्थ की अधिष्ठात्री शक्ति

महाविद्या भुवनेश्वरी

ज्ञान अर्थ को दिशा देता है अर्थ ज्ञान को आधार देता है

ज्ञान आध्यात्मिक पथ है, जबकि अर्थ भौतिक मार्ग है। दोनों ही जीवन में आवश्यक हैं। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किए बिना अध्यात्म केवल कोरा ज्ञान बनकर रह जाता है और **अध्यात्म के अभाव में भौतिकता एक ऐसी अंधी दौड़ बन जाती है, जिसका न कोई पूर्ण विराम होता है और न ही कोई अल्पविराम।**

हमारे जीवन के अधिकांश द्वंद्वों का मूल कारण यही है कि हम ज्ञान और अर्थ के बीच सामंजस्य स्थापित करना नहीं जानते। इसका कारण यह नहीं है कि हम ऐसा करना नहीं चाहते, बल्कि यह है कि हम इस बात से अनभिज्ञ हैं कि यह संतुलन स्थापित कैसे किया जाए?

इसका ज्वलंत उदाहरण द्रोणाचार्य हैं। द्रोणाचार्य ने ज्ञान के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए थे, परंतु अपने परिवार के लिए अर्थ की समुचित व्यवस्था नहीं कर पाए। परिणाम यह हुआ कि उनकी पत्नी कृपी को अश्वत्थामा को चावल के आटे में पानी मिलाकर दूध बताकर पिलाना पड़ा। जब सहपाठियों ने अश्वत्थामा का उपहास उड़ाया, तब द्रोणाचार्य अपने बालसखा द्रुपद के पास आर्थिक सहायता की आशा लेकर पहुंचे। किंतु वहां उन्हें सहायता नहीं, बल्कि घोर अपमान का सामना करना पड़ा।

वह अपमान द्रोणाचार्य के भीतर प्रतिशोध की ऐसी अग्नि बनकर धधकने लगा, जिसने आगे चलकर महाभारत के युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यदि उनके जीवन में ज्ञान के साथ-साथ अर्थ का भी संतुलन होता, तो संभवतः इतिहास की दिशा कुछ और होती।

अर्थ की आवश्यकता तो प्रत्येक क्षण पड़ती है। उसके बिना न भोजन की व्यवस्था हो सकती है, न सिर पर छत मिल सकती है और न ही परिवार का पालन-पोषण किया



भुवनेश्वरी महाविद्या अनन्त आकाश के समान व्यापक चेतना, ज्ञान, करुणा, सौन्दर्य और ऐश्वर्य की प्रतीक हैं। तांत्रिक एवं शाक्त परम्परा में उन्हें सृष्टि, पालन और संहार की मूल शक्ति माना गया है।

महाविद्या भुवनेश्वरी ज्ञान रूपी समृद्धि प्रदान करती है, जिससे निर्मल हृदय, उच्च विचार, आत्मज्ञान और समस्त सृष्टि के प्रति प्रेम एवं करुणा का भाव जाग्रत होता है।

महाविद्या भुवनेश्वरी साधक के जीवन में शांति, संतुलन और दिव्य चेतना का संचार करती है...

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

जा सकता है। इसलिए स्वाभाविक है कि हम अर्थ को महत्त्व दें। परंतु अर्थ के साथ यदि ज्ञान की ज्योति न जले, तो अनर्थ होते देर नहीं लगती। मनुष्य अज्ञान के भंवर में ही उलझा रह जाता है।

केवल धन कमा लेना ही पर्याप्त नहीं है, उसके सदुपयोग की बुद्धि भी होनी चाहिए। अन्यथा वही धन कभी अहंकार का कारण बन जाता है, कभी अशांति का और कभी विनाश का।

वर्तमान जीवन की चुनौती

अर्थोपार्जन करते समय यह जानना भी उतना ही आवश्यक है कि कितना धन पर्याप्त है। यदि इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास नहीं है, तो हम अपना पूरा जीवन धन अर्जित करने में लगा दें, फिर भी प्रसन्न नहीं रह पाएंगे। धन कमाना एक कला है, पर उससे भी बड़ी कला है उसका विवेकपूर्ण उपयोग। यदि धन का उपयोग ही न किया जाए, तो जीवन में आवश्यक सुविधाएं नहीं आएंगी और यदि सारा धन व्यर्थ व्यय कर दिया जाए, तो भविष्य असुरक्षित हो जाएगा। फिर संतुलन कैसे स्थापित होगा?

आज के समय का यही यक्ष-प्रश्न है, विशेषकर तब, जब लगभग हर सुविधा ईएमआई के सहारे सहज उपलब्ध दिखाई देती है। पचहत्तर इंच का टेलीविज़न, डबल डोर फ्रिज, बड़ी कार, विशाल घर, विदेश यात्रा मानो प्रत्येक इच्छा के सामने ईएमआई कल्पवृक्ष की तरह खड़ी हो, जो हर आकांक्षा पर **'तथास्तु'** कहने को तैयार हो।

आज वस्तुओं को प्राप्त करना पहले जितना कठिन नहीं रहा; कठिनाई तो उन्हें प्राप्त करने की इच्छा पर संयम रखने में है। बाजार दिन-रात हमारे मन को यह विश्वास दिलाने में लगा है कि अभी जो तुम्हारे पास है, वह पर्याप्त नहीं है। तुम्हें इससे बड़ा घर चाहिए, इससे महंगी गाड़ी चाहिए, इससे नवीनतम मोबाइल चाहिए। इस प्रकार आवश्यकताएं धीरे-धीरे इच्छाओं में और इच्छाएं लालसा में परिवर्तित हो जाती हैं।

किन्तु प्रश्न यह है कि इस ईएमआई के जंजाल को कितना बढ़ाया जाए? पांच हजार, दस हजार, पचास हजार या उससे भी अधिक? इसका निर्णय कौन करेगा? यह ज्ञान कहां से आएगा?

यदि हमारी आय बढ़े, तो क्या उसी अनुपात में हमारी ईएमआई भी बढ़ती चली जाए? क्या जीवन का उद्देश्य केवल अगली किस्त चुकाने के लिए काम करना है? यदि ऐसा है, तो हम धन के स्वामी नहीं, बल्कि उसके सेवक बन चुके हैं।

वास्तविक प्रश्न ईएमआई का नहीं, विवेक का है। **ऋण तभी तक उपयोगी है, जब तक वह जीवन को सरल बनाता है; जिस क्षण वही ऋण मन की शांति, पारिवारिक संबंधों और स्वास्थ्य पर बोझ बनने लगे, उसी क्षण वह सुविधा**

नहीं, बंधन बन जाता है। इसलिए यह निर्णय बैंक नहीं कर सकता, बाजार नहीं कर सकता, पड़ोसी नहीं कर सकता। इसका निर्णय केवल ज्ञान कर सकता है वही ज्ञान, जो हमें यह बताता है कि आवश्यकता कहां समाप्त होती है और लालसा कहां से प्रारम्भ होती है।

बुद्धि तो ज्ञान से ही आएगी कि हम अंतर्मुखी बनें या फिर दूसरों को देखकर अपने सुख की परिभाषा निर्धारित करते रहें।

ऐसा सुख कभी स्थायी नहीं हो सकता। जैसे झूले पर खड़े होकर संतुलन प्राप्त नहीं किया जा सकता, वैसे ही **ज्ञान के बिना अर्थ की अंधी दौड़ में भागते हुए मनुष्य केवल एक सुख से दूसरे सुख का पीछा करता रहता है। अंततः या तो उसका शरीर बीमार पड़ जाता है या उसका मन निराशा से भर जाता है। वास्तव में दोनों स्थितियां एक ही असंतुलन की भिन्न अभिव्यक्तियां हैं।**

अर्थ जीवन का एक महान सत्य है, परंतु यह सत्य ज्ञान के प्रकाश में ही अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करता है। **ज्ञान अर्थ को दिशा देता है और अर्थ ज्ञान को आधार।** जब ये दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं, तभी जीवन में समृद्धि के साथ शांति, सुविधा के साथ संतोष और सफलता के साथ सार्थकता का उदय होता है। यही ज्ञान और अर्थ का वास्तविक सामंजस्य है।

ज्ञान हमारे जीवन में दीपक के समान है।

जिस प्रकार अंधकारमय मार्ग पर एक छोटा-सा दीपक भी यात्री को दिशा दिखा देता है, उसी प्रकार ज्ञान जीवन के कठिन पथ पर हमें उचित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। **ज्ञान केवल यह नहीं बताता कि क्या प्राप्त करना है, बल्कि यह भी सिखाता है कि उसे किस प्रकार प्राप्त करना है और प्राप्त होने के बाद उसका उपयोग किस उद्देश्य के लिए करना है।**

एक बार एक व्यक्ति एक संत के पास पहुंचा। उसने अत्यन्त व्याकुल होकर कहा, 'गुरुदेव! मेरे जीवन में चारों ओर अंधकार ही अंधकार है। मुझे समझ ही नहीं आता कि किस मार्ग पर चलूं।'

संत मुस्कुराए। उन्होंने कोई लंबा उपदेश नहीं दिया। केवल एक छोटा-सा दीपक जलाया और उस व्यक्ति के हाथ में देते हुए बोले, 'अब चलो।'

शक्ति है ''ज्ञान''
ज्ञान का स्वरूप है - चेतना
ज्ञान का स्वरूप है - बुद्धि
ज्ञान का स्वरूप है - विवेक
ज्ञान का स्वरूप है - निर्भयता,
ज्ञान का स्वरूप है - निरन्तर कार्य करने की भावना
ज्ञान का स्वरूप है - एकाग्रता
ज्ञान का स्वरूप है - कुशलता
ज्ञान का स्वरूप है - अभ्यास
ये सब हमारी चेतना के स्वरूप है।

वह व्यक्ति बोला, 'गुरुदेव, यह छोटा-सा दीपक पूरे मार्ग को कैसे प्रकाशित करेगा?'

संत ने उत्तर दिया, 'तुम्हें पूरे मार्ग का प्रकाश एक साथ नहीं चाहिए। तुम्हें केवल अगला कदम दिखाई देना चाहिए। जब तुम वह कदम बढ़ा दोगे, तब अगला भाग स्वयं प्रकाशित हो जाएगा।'

यही ज्ञान का स्वरूप है। ज्ञान भविष्य के प्रत्येक क्षण का उद्घाटन नहीं करता, बल्कि वर्तमान में सही निर्णय लेने का विवेक देता है और जब विवेक के साथ अर्थ का अर्जन होता है, तब धन साधन बनता है, साध्य नहीं।

भुवनेश्वरी महाविद्या हमें इसी संतुलन का संदेश देती हैं। वे सिखाती हैं कि संसार से भागना अध्यात्म नहीं है और संसार में डूब जाना भी बुद्धिमानी नहीं है। वास्तविक साधना यह है कि अर्थ का अर्जन करो, पर उसके स्वामी बनो, दास नहीं। ज्ञान प्राप्त करो, पर उसे केवल विचारों तक सीमित मत रखो; उसे अपने व्यवहार और जीवन में उतारो।

जब ज्ञान और अर्थ का सामंजस्य स्थापित हो जाता है, तभी जीवन में समृद्धि भी आती है और शांति भी। तभी मनुष्य केवल सफल नहीं होता, बल्कि सार्थक भी बनता है।